International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 11 | Nov - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

# सीकर शहर का शिक्षण नगरी के रूप में विकास : पर्यावरण एवं आर्थिक संरचना पर प्रभाव का एक भौगोलिक–आर्थिक अध्ययन

## The Development of Sikar City as an Educational Hub: A Geographical-Economic Study of its impact on the Environment and Economic Structure

**प्रदीप कुमार पालीवाल**
शोधार्थी, भूगोल विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राज.)–331001

***सारांश***

*नगरीय क्षेत्रों का भौतिक विस्तार या उसके क्षेत्रफल, जनसंख्या आदि में अधिक वृद्धि होना 'नगरीकरण' कहलाता है। भारत में बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिक विकास ने नगरों के निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नगर बनने की यह प्रक्रिया अधिक पुरानी नहीं होकर एक प्रकार से नवीनतम प्रक्रिया है। नगरीय क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र होता है जहाँ पर जनसंख्या घनत्व और मानवीय क्रियाकलाप उस क्षेत्र के आसपास के क्षेत्रों से अधिक होता है। नगरीय क्षेत्र में आमतौर पर नगरों, कस्बों, या उपनगरीय विस्तारों को सम्मिलित किया जाता है लेकिन इसमें ग्रामीण क्षेत्रों को सम्मिलित नहीं किया जाता। नगरीय क्षेत्र के विस्तार का मापन जनसंख्या घनत्व और अव्यवस्थित फैलाव के विश्लेषण के लिए और नगरीय और ग्रामीण जनसंख्या के निर्धारण के लिए किया जाता है। सीकर शहर में भी लगातार शिक्षा सुविधाओं एवं आधारभूत सुविधाओं के विकास के कारण नगरीकरण में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है। जिसके परिणाम स्वरूप सीकर शहर में प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक संरचना एवं पर्यावरण पर प्रभाव देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में सीकर शहर में हुए तीव्र शहरीकरण के मुख्य कारण 'शिक्षा नगरी' के रूप में विकास के परिणामस्वरुप हुए सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन किया गया है।*

***मुख्यबिन्दु*** :– *नगरीकरण, शिक्षा नगरी, शहरीकरण, उपनगर, आर्थिक संरचना एवं पर्यावरण, नगरीय समस्या, समाधान, सुझाव एवं निष्कर्ष।*

## परिचय

समकालीन इतिहास को प्रभावित करने वाले सबसे गतिशील करको में 'शहरीकरण' प्रमुख कारक है, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय जनसांख्यिकीय, सामाजिक–आर्थिक प्रतिरूप में गहरा परिवर्तन हो रहा है। शहर जीवन स्तर को ऊंचा उठाते हैं, धन प्रदान करते हैं और वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देते हैं, लेकिन वे सतत विकास में बड़ी बाधाए भी उत्पन्न करते हैं। शहरीकरण ने कई गुना पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं को जन्म दिया है। शहरो में तीव्र जनसँख्या वृद्धि व शहरीकरण ने बहुत बड़ी समस्या पैदा की है जो सभी पर्यावरणीय संकटो की जड़ है। इसी परिदृश्य ने सीकर शहर में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में उथल पुथल की स्थिति पैदा कर दी है। 'शिक्षा नगरी' के रूप में विकसित सीकर शहर में बढ़ती आबादी के कारण, आस पास खेती के तहत भूमि कम हो गई है। अधिक भीड़ परिवहन सेवाओं को भी प्रभावित करती है या कहे तो अधिक भीड़ से यातायात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और यह वायु प्रदूषण का भी मुख्य कारण बन जाता है। जनसँख्या वृद्धि निवास की समस्या के लिए भी जिम्मेदार है, क्योंकि लोग आसपास के स्थानों पर निवास का पता लगाने की कोशिश करते है और यह उपनगरों के गठन का कारण बनता है, जिसके परिणामस्वरूप खेती के तहत भूमि कम हो गई है। भूमि उपलब्ध्ता के लिए वनों की कटाई की जाती है, वनों की कटाई भी पारिस्थितिकी असंतुलन का कारण बनती है।

## साहित्य पुनरावलोकन

**हिरेमथ एट अल** (2013) ने अनियोजित बड़े पैमाने पर मानव बस्तियों कि बसावट के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग, भारी मात्रा में अपशिष्ट उत्पादन और नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव कि आलोचना की है।

**हासे एट अल** (2018) ने शहरीकरण के विभिन्न दृष्टिकोण और दुनिया भर में शहरीकरण कि प्रवृत्ति पर चर्चा की। उन्होंने 21वीं सदी में शहरीकरण के कारण दुनिया भर के देशों के सामने आने वाली उभरती चुनौतियों का भी वर्णन किया है।

**गुप्ता, एम.एल** (2021) अपने शोध 'अव्यवस्थित शहरीकरणः कारण और निवारण' में कहा कि शहरी नियोजन की कमी, तीव्र पलायन और भूमि उपयोग नीति की असफलता अव्यवस्थित शहरीकरण के मुख्य कारण हैं।

यह सच है कि शहरीकरण के लिए बड़े पैमाने पर ऊर्जा की खपत आवश्यक है, लेकिन यह पर्यावरणीय गिरावट में भी योगदान देता है। उपयुक्त मुद्दे को संबोधित करने के लिए **युसूफ खान मोहम्मद आजम खान और शादमान जफर** (2023) का शोध नवाचारों, अनुसंधान और विकास प्रयासों, पर्यावरण के अनुकूल तकनीक के लिए धन, संसाधन अनुकूलन और पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कार्य पर केंद्रित है।

**राजस्थान पत्रिका** (2023) अखबार में प्रकाशित लेख 'सीकर में 12 साल में बढ़ गई छह लाख आबादी, बदल गए मापदंड और स्वरूप' के अनुसार प्रदेश में कोटा के बाद एज्यूकेशन हब के रूप में प्रसिद्ध सीकर जिले की आबादी पिछले 12 साल में करीब छह लाख बढ़ गई है। एक दशक में सीकर शहर का दायरा बढ़ा और नगर विकास न्यास में दो दर्जन से ज्यादा गांव शामिल हुए। वर्ष 2011 की साक्षरता दर में 12 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

## उद्देश्य

1. सीकर शहर में शैक्षणिक गतिविधियों के विस्तार और नगरीकरण के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
2. सीकर शहर का शिक्षण नगरी के रूप में विकास के कारण स्थानीय पर्यावरण (जल संसाधन, यातायात, प्रदूषण) पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों का आकलन करना।
3. इस विकास से उत्पन्न हुए आर्थिक अवसरों (रोजगार, किराया, सेवा क्षेत्र का विस्तार) और चुनौतियों की जाँच करना।

## अध्ययन क्षेत्र

सीकर जिला भारत के राजस्थान राज्य का एक जिला है जो कि राजस्थान के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है। यह जिला 'शेखावाटी' के नाक्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य में जिले का 17वां स्थान है। प्रशासनिक दृष्टि से जिले को 3 उपखण्डों– सीकर, नीमकाथाना, एवं फतेहपुर तथा निम्न तहसीलों (सीकर, फतेहपुर, नीमकाथाना, खण्डेला, लक्ष्मणगढ़, दांतारामगढ़, श्रीमाधोपुर) में विभक्त किया गया है। सीकर जिले की जलवायु शुष्क है। सीकर जिला राजस्थान के उत्तर–पूर्वी भाग में 27°21′ उत्तरी अक्षांश से 28°12′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 74°44′ से 75°25′ पूर्वी देशांतर के मध्य फैला हुआ है। म से भी जाना जाता है। इसके उत्तर में झुंझुनू, उत्तर–पश्चिम में चूरू, दक्षिण–पश्चिम में नागौर और दक्षिण–पूर्व में जयपुर जिले की सीमाएं लगती हैं।

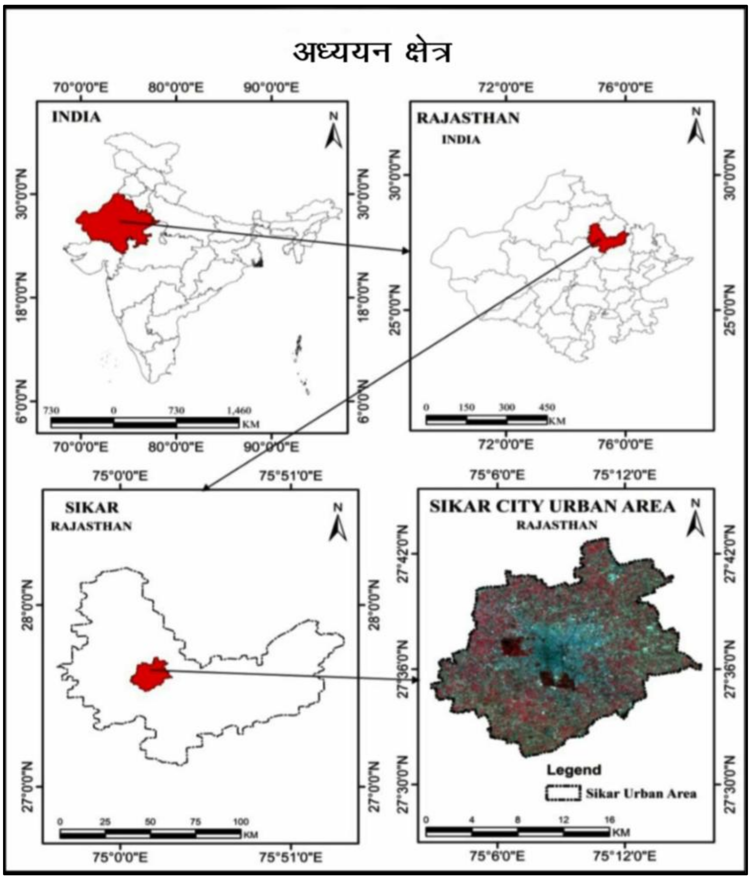


जयपुर संभाग के अंतर्गत यह जिला जयपुर से लगभग 114 किमी दूरी पर स्थित है। जनगणना 2011 के अनुसार सीकर जिले की कुल जनसंख्या 26,77,737 है, जिसमें 51.45 प्रतिशत पुरुष तथा 48.55 प्रतिशत महिलाएं है। जिले की साक्षरता 71.19 प्रतिशत है। अगर सीकर शहर (अध्ययन क्षेत्र) कि बात की जाये तो सीकर शहर का क्षेत्रफल 39.66 वर्ग किमी है और जनगणना 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 2,44,497 है।

## शैक्षणिक परिदृश्य : संक्षिप्त परिचय

राजस्थान का सीकर शहर शेखावाटी क्षेत्र में एक प्रमुख शैक्षणिक केंद्र (एजुकेशनल हब) के रूप में तेजी से उभर रहा है। इसे अब (शिक्षा नगरी) या (मिनी कोटा) के नाम से भी जाना जाता है। इसके उभरने के प्रमुख कारण और विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

1. **प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग का केंद्र :** सीकर की पहचान मुख्य रूप से राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) और संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई–आईआईटी) जैसी इंजीनियरिंग और

मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए एक बड़े कोचिंग केंद्र के रूप में हुई है। कई प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान यहां स्थापित हुए हैं, जो छात्रों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, अनुभवी शिक्षक और व्यवस्थित तैयारी का माहौल प्रदान करते हैं। इन संस्थानों की सफलता दर प्रभावशाली रही है, जिससे छात्रों और अभिभावकों का विश्वास बढ़ा है। पिछले कुछ वर्षों के परीक्षा परिणामोंनुसार, सफलता दर के मामले में यह कोटा को भी पीछे छोड़ रहा है।

2. **गुणवत्तापूर्ण स्कूली व उच्च शिक्षा** : सीकर में आधुनिक स्कूलों और आवासीय विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई है, जो छात्रों को बोर्ड की परीक्षाओं के साथ–साथ प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी में संतुलन बनाने में मदद करते हैं। आईआईटी/नीट/जेईई और डिफेंस/एसएससी परीक्षाओं जैसी विभिन्न परीक्षाओं के लिए तैयारी करवाने वाले कुछ प्रमुख संस्थानों में एलन सीकर, सीएलसी सीकर, प्रिंस (पीसीपी सीकर), मैट्रिक्स अकादमी और गुरुकृपा कैरियर इंस्टीट्यूट शामिल हैं। इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण संस्थान हैं जैसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, श्री कल्याण राजकीय मेडिकल कॉलेज, मोदी यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (केवल महिलाओं के लिए) जैसे निजी संस्थान आदि।

3. **उभार के मुख्य कारण**

- उद्यमी वर्ग का योगदान : शेखावाटी क्षेत्र के व्यापारिक समुदाय (सेठ साहूकारों) ने ऐतिहासिक रूप से और आधुनिक समय में भी शिक्षण संस्थानों की स्थापना में भारी निवेश किया है।
- कम खर्च : यह शहर बड़े मेट्रो शहरों की तुलना में किफायती आवास और शिक्षा प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण और मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए यह एक आकर्षक विकल्प बन गया है।
- सरकारी और डिजिटल सहयोग : सरकार ने भी डिजिटल क्लासरूम और छात्रवृत्तियां प्रदान करके शिक्षा के विकास में सहयोग किया है।
- सफल उदाहरण : स्थानीय शिक्षकों और छात्रों की उच्च रैंक प्राप्त करने की सफलताओं ने क्षेत्र की प्रतिष्ठा को और बढ़ाया है।

सीकर का यह उभार परिश्रम, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और सामुदायिक महत्वाकांक्षा का प्रतीक है, जिसने इसे राजस्थान के शैक्षणिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

**नगरीकरण की प्रवृत्ति :** विगत चार दशकों में जनसंख्या और शहरी विस्तार में हुई वृद्धि का विश्लेषण निम्न तालिका, आरेख व मानचित्रों द्वारा दर्शाया गया है–

**तालिका : जनसंख्या वृद्धि प्रवृत्ति, सीकर शहर {1991–2031(अनुमानित)}**

| जनगणना वर्ष | जनसंख्या | दशकीय वृद्धिदर (प्रतिशत में) |
|---|---|---|
| 1991 | 1,48,272 | 44.00 |
| 2001 | 1,85,925 | 25.39 |
| 2011 | 2,37,579 | 27.78 |
| 2021 | 3,25,405 | 36.96 |
| 2031 (अनुमानित) | 4,28,066 | 31.54 |

स्त्रोत : List of cities and towns in Rajasthan from Wikipedia, November 2025

**आरेख : सीकर शहर की जनसंख्या व दशकीय वृद्धिदर {1991–2031(अनुमानित)}**

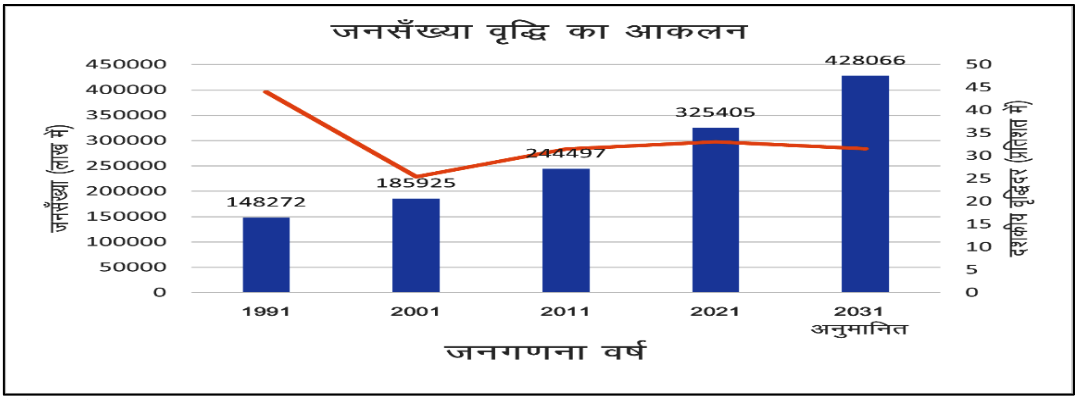


स्त्रोत : भारतीय जनगणना (1991–2011)

**मानचित्र 1 : सीकर शहर का नगरीकरणीय स्वरूप, 1991**

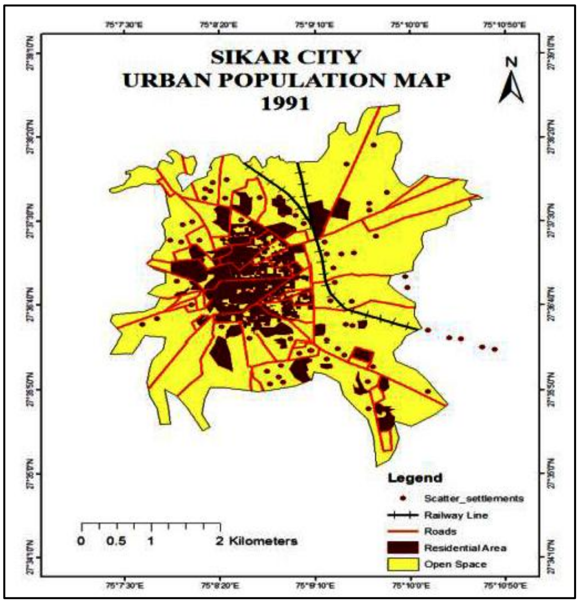


**मानचित्र 2 : सीकर शहर का नगरीकरणीय स्वरूप, 2020**

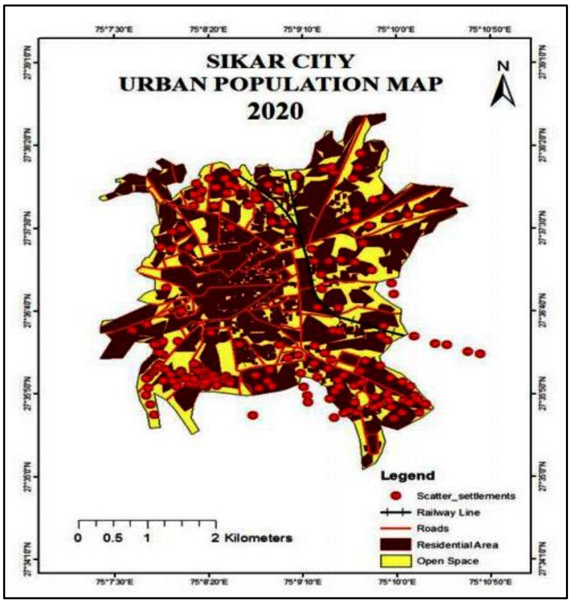

## शिक्षण नगरी के विकास का पर्यावरण पर प्रभाव

सीकर के शिक्षण नगरी के रूप में विकास का पर्यावरण पर प्रभाव एक गंभीर और बहुआयामी विषय है, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं में अधिक विस्तार से समझा जा सकता है :–

❖ **जल संसाधनों पर अत्यधिक दबाव** : सीकर की तीव्र शैक्षणिक वृद्धि का सबसे बड़ा पर्यावरणीय प्रभाव इसके भूजल और पेयजल आपूर्ति पर पड़ा है।

- बढ़ता जल उपभोग : लाखों छात्रों और उनसे जुड़ी सहायक सेवाओं (हॉस्टल, मेस, किराये के आवास) के कारण शहर की कुल जल मांग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।
- भूजल स्तर में गिरावट : यह बढ़ी हुई मांग मुख्य रूप से भूजल के अत्यधिक दोहन से पूरी होती है, जिससे भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है।
- मास्टर प्लान का अभाव : शहर में जल वितरण और निकासी की कोई दीर्घकालिक, नियोजित व्यवस्था नहीं होने के कारण, पुरानी जल वितरण प्रणालियों पर अत्यधिक बोझ पड़ गया है, जिससे खासकर गर्मी के महीनों में जल संकट की स्थिति पैदा होती है।

❖ **अपशिष्ट और प्रदूषण की समस्या** : छात्रों और शैक्षणिक गतिविधियों की सघनता ने शहर के अपशिष्ट प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण को भी चुनौती दी है।

- ठोस अपशिष्ट में वृद्धि : छात्रों के निवास और वाणिज्यिक भोजनालयों से निकलने वाले ठोस अपशिष्ट की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। शहर के अपशिष्ट प्रबंधन की क्षमता इस तीव्र वृद्धि को संभालने में विफल रही है, जिससे गंदगी और स्वास्थ्य संबंधी जोखिम बढ़ रहे हैं।
- सीवेज और जल प्रदूषण : हॉस्टल और नई कॉलोनियों के अनियोजित विकास के कारण सीवेज जल निकासी की उचित व्यवस्था नहीं है। अनुपचारित सीवेज अक्सर खुले में बहता है या जल निकायों में मिल जाता है, जिससे जल प्रदूषण और बीमारियाँ फैलती हैं।
- प्लास्टिक का उपयोग : कोचिंग संस्थानों और छात्र समुदायों में डिस्पोजेबल वस्तुओं (जैसे प्लास्टिक के कप, प्लेट) का अत्यधिक उपयोग होता है, जिससे गैर–बायोडिग्रेडेबल अपशिष्ट का अंबार लग जाता है।

❖ **यातायात और वायु प्रदूषण** : शैक्षणिक संस्थान, हॉस्टल और कोचिंग केंद्र अक्सर शहर के मुख्य या सघन क्षेत्रों में केंद्रित होते हैं, जिससे यातायात की समस्या गंभीर हो जाती है।

- यातायात जाम : सुबह और शाम के व्यस्त समय में जब छात्र एक साथ शिक्षण संस्थानों से आते–जाते हैं, तो मुख्य सड़कों पर भीषण जाम लग जाता है।

- वाहनों की संख्या : छात्रों और शिक्षकों द्वारा व्यक्तिगत वाहनों (टू–व्हीलर) के बढ़ते उपयोग से सड़कों पर वाहनों की संख्या बहुत अधिक हो गई है।
- वायु प्रदूषण : यातायात जाम और वाहनों के धुएं से निकलने वाले हानिकारक कणों और गैसों के कारण शहर का वायु प्रदूषण स्तर बढ़ गया है, जिससे श्वास संबंधी समस्याओं का खतरा उत्पन्न होता है।

❖ **अनियोजित नगरीय विस्तार** : शिक्षा के कारण नगरीय सीमा का विस्तार हुआ है, लेकिन यह विकास अक्सर अनियंत्रित रहा है।

- हरित क्षेत्रों की क्षति : आवास और हॉस्टल बनाने के लिए कृषि योग्य भूमि और हरित क्षेत्रों का अतिक्रमण हुआ है। यह शहर के प्राकृतिक पर्यावरण और भू–उपयोग पैटर्न को बदलता है।
- बुनियादी ढाँचे का अभाव : शहर की बाहरी कॉलोनियों, जहाँ छात्र निवास करते हैं, में अक्सर सड़कों, नालियों और स्ट्रीट लाइट जैसी बुनियादी नागरिक सुविधाओं का अभाव होता है, जिससे अव्यवस्था और अस्वच्छता की स्थिति बनती है।

ये कारक दर्शाते हैं कि शिक्षण नगरी के विकास को सतत विकास की दिशा में ले जाने के लिए पर्यावरणीय नियोजन और बुनियादी ढाँचे में बड़े निवेश की तत्काल आवश्यकता है। सीकर में शिक्षण नगरी के विकास से उत्पन्न **पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान और प्रबंधन के उपाय** निम्नलिखित हैं, जो शहर के सतत और संतुलित विकास के लिए आवश्यक हैं :

❖ **जल संसाधन प्रबंधन**–सीकर की सबसे बड़ी चुनौती भूजल संकट है। इसके प्रबंधन हेतु आवश्यक उपाय :

- वर्षा जल संचयन को अनिवार्य करना : सभी नए बड़े शैक्षणिक संस्थानों, हॉस्टलों और 300 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्रफल वाले आवासीय भवनों में वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित करना अनिवार्य किया जाना चाहिए।
- भूजल रिचार्ज : शहर और आस–पास के क्षेत्रों में परम्परागत जल स्त्रोतों (जैसे बावड़ी, झालरा) का जीर्णोद्धार करना और चेक डैम बनाकर भूजल रिचार्ज को बढ़ाना।
- जल संरक्षण और जागरूकता : छात्रों और निवासियों के बीच जल के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए जागरूकता अभियान चलाना।

- पुनःउपयोग : हॉस्टल और बड़े संस्थानों में ग्रे–वॉटर (नहाने–धोने का पानी) को बागवानी और शौचालय फ्लश के लिए उपचारित कर उपयोग करना।

❖ **अपशिष्ट और प्रदूषण नियंत्रण** – ठोस अपशिष्ट और सीवेज प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए प्रबंधन नीतियाँ :

- पृथक्करण और प्रसंस्करण : शिक्षण संस्थानों और हॉस्टलों में ठोस अपशिष्ट का स्त्रोत पर ही पृथक्करण (गीला, सूखा, खतरनाक) अनिवार्य करना। गीले कचरे के लिए विकेन्द्रीकृत कम्पोस्टिंग इकाइयों को बढ़ावा देना।
- सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट : शहर के प्रमुख सीवेज आउटलेट पर पर्याप्त क्षमता वाले सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट(एसटीपी) स्थापित करना और छोटे समूहों में हॉस्टलों के लिए भी मिनी–(एसटीपी) अनिवार्य करना।
- प्लास्टिक प्रतिबंध : शैक्षणिक परिसरों और उनसे जुड़े भोजनालयों में एकल–उपयोग प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना और कपड़े व जूट के थैलों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।

❖ **यातायात और वायु गुणवत्ता** – यातायात जाम और वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए नियोजित दृष्टिकोण :

- सार्वजनिक और साझा परिवहन : छात्रों को साइकिल के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना और शिक्षण संस्थानों के बीच किफायती साझा बस सेवाएँ शुरू करना।
- यातायात प्रबंधन : शहर के भीड़भाड़ वाले शैक्षणिक गलियारों के लिए पीक आवर में भारी वाहनों के प्रवेश को प्रतिबंधित करना और स्मार्ट ट्रैफिक सिग्नलिंग का उपयोग करना।
- हरित परिवहन को प्रोत्साहन : शैक्षणिक संस्थानों को इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग पॉइंट स्थापित करने के लिए प्रेरित करना।
- सड़क किनारे वृक्षारोपण : प्रमुख सड़कों और डिवाइडरों के किनारे सघन वृक्षारोपण करना ताकि ये वायु प्रदूषण शोषक के रूप में कार्य कर सकें।

❖ **नियोजित नगरीय विकास** – अनियोजित विस्तार को नियंत्रित करने के लिए दीर्घकालिक समाधान :

- मास्टर प्लान का सख्त क्रियान्वयन : नया मास्टर प्लान तुरंत लागू करना और उसमें एजुकेशन जोन को स्पष्ट रूप से सीमांकित करना।

- हरित पट्टी और पार्क : नए विकास क्षेत्रों में हरित पट्टी और छात्रों के लिए पार्क व खुली जगहें आरक्षित करना और उनका रखरखाव सुनिश्चित करना।
- नियमन : नई कॉलोनियों और हॉस्टलों को तभी अनुमति देना जब वे सड़क, नाली, और अपशिष्ट प्रबंधन के मानकों को पूरा करते हों।
- विकेन्द्रीकरण : नए शैक्षणिक संस्थानों को शहर के बाहरी और उपनगरीय क्षेत्रों में स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन देना, जिससे पुराने शहर की सघनता कम हो।

## शिक्षण नगरी के विकास का आर्थिक संरचना पर प्रभाव

सीकर के शिक्षण नगरी के रूप में विकास का आर्थिक संरचना पर प्रभाव बहुत व्यापक और मुख्य रूप से सकारात्मक रहा है, जिसने स्थानीय अर्थव्यवस्था को रूपांतरित कर दिया है। इसे निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं में विस्तार से समझा जा सकता है :

- ❖ **अर्थव्यवस्था का मुख्य चालक** : शिक्षण क्षेत्र अब सीकर की स्थानीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन गया है, जिसने पारंपरिक कृषि–आधारित या व्यापार–आधारित संरचना को बदल दिया है।
  - जीडीपी में योगदान : शैक्षणिक गतिविधियों (कोचिंग संस्थान, स्कूल, कॉलेज) से होने वाला राजस्व और संबंधित सहायक सेवाओं का योगदान शहर के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सबसे बड़ा हिस्सा है।
  - पूंजी का प्रवाह : देश भर से लाखों छात्रों के आगमन से शहर में प्रतिवर्ष बड़ी मात्रा में पूंजी का प्रवाह होता है, जो स्थानीय बाजारों को जीवंत रखता है।
- ❖ **रियल एस्टेट और आवास बाजार पर प्रभाव** : शिक्षण क्षेत्र ने शहर के रियल एस्टेट और आवास बाजार में अभूतपूर्व उछाल ला दिया है।
  - किराये के माध्यम से आय में वृद्धि :
    - छात्रों की बढ़ती संख्या के कारण किराये के आवास की मांग चरम पर है।
    - इसने स्थानीय निवासियों के लिए आय का एक बड़ा स्त्रोत बनाया है, क्योंकि कई परिवारों ने अपने घरों को हॉस्टल या किराये के कमरों में बदल दिया है, जिससे उनकी आत्म–निर्भरता और राजस्व में सुधार हुआ है।

- भूमि मूल्यों में वृद्धि : शैक्षणिक हब के आसपास की जमीन की कीमतें कई गुना बढ़ गई हैं, जिससे स्थानीय संपत्ति धारक आर्थिक रूप से मजबूत हुए हैं।

❖ **रोजगार सृजन** : शिक्षण क्षेत्र प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करता है।

- प्रत्यक्ष रोजगार :
  - हजारों शिक्षक, प्रोफेसर, और गैर–शिक्षण कर्मचारी जैसे कि प्रशासक, काउंसलर, और लैब अटेंडेंट सीधे शैक्षणिक संस्थानों में कार्यरत हैं।
- अप्रत्यक्ष रोजगार :
  - आवास और खानपान : हॉस्टल वार्डन, मेस कुक, रसोइये, और डिलीवरी कर्मियों की मांग बढ़ी है।
  - व्यापार और वाणिज्यिक सेवाएं : स्टेशनरी की दुकानें, साइबर कैफे, बैंक, कपड़े धोने की सेवाएं, और छोटे भोजनालय तेजी से बढ़े हैं।
  - परिवहन : टैक्सी, ऑटो रिक्शा और बस सेवाओं की मांग में वृद्धि हुई है।

❖ **सेवा क्षेत्र का विस्तार :** एक शैक्षणिक केंद्र होने के कारण आवश्यक सहायक सेवाओं का विस्तार हुआ है।

- स्वास्थ्य सेवाएँ : छात्रों और उनके अभिभावकों को ध्यान में रखते हुए शहर में निजी चिकित्सालयों और फार्मेसियों की संख्या बढ़ी है।
- मनोरंजन और पर्यटन : छात्रों के अवकाश और अभिभावकों के ठहराव के लिए मनोरंजन केंद्र, सिनेमा हॉल और होटल व गेस्ट हाउस का विकास हुआ है।
- वित्तीय समावेशन : छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों के लिए बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं का नेटवर्क मजबूत हुआ है।

➢ **आर्थिक चुनौतियाँ** : विकास के बावजूद कुछ आर्थिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं :

- महंगाई : बढ़ती मांग के कारण किराए के अलावा खाद्य सामग्री और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कीमतों में भी वृद्धि हुई है, जिससे स्थानीय गैर–शिक्षण आबादी पर आर्थिक दबाव पड़ा है।
- अकुशल श्रम पर सीमित प्रभाव : रोजगार के अवसर मुख्यतः सेवा क्षेत्र में केंद्रित हैं। अकुशल व पारंपरिक श्रमिकों को इस आर्थिक उछाल का सीमित लाभ मिला है।

- एकल–स्त्रोत निर्भरता : शहर की अर्थव्यवस्था अब मुख्य रूप से एकल उद्योग (शिक्षा) पर अत्यधिक निर्भर हो गई है। यदि किसी कारणवश यह उद्योग प्रभावित होता है, तो पूरी स्थानीय अर्थव्यवस्था पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

यह स्पष्ट है कि सीकर के शिक्षण नगरी के रूप में विकास ने इसे आर्थिक रूप से मजबूत और जीवंत बनाया है, लेकिन यह विकास संतुलित और समावेशी होना आवश्यक है। सीकर की **अर्थव्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित करने और वर्तमान चुनौतियों का समाधान** करने के लिए समाधान और भावी आर्थिक विकास की रणनीतियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जिसकी विस्तृत जानकारी निम्न है :

### 1. रियल एस्टेट और आवास प्रबंधन

| चुनौती | समाधान की रणनीति | विवरण |
|---|---|---|
| किराया और महंगाई नियंत्रण | किराया विनियमन नीति | नगर परिषद और यूआईटी द्वारा हॉस्टल और पीजी के लिए एक मानक और पारदर्शी किराया नीति बनाई जाए ताकि छात्रों का शोषण न हो और स्थानीय परिवारों की आय भी बनी रहे। |
| अनौपचारिक आवास का नियमन | हॉस्टल पंजीकरण अनिवार्य | सभी निजी पीजी और हॉस्टल को अनिवार्य रूप से पंजीकृत किया जाए। यह नियमन सुरक्षा, सुविधाओं और उचित किराए को सुनिश्चित करेगा। |
| नियोजित विस्तार | एजुकेशन जोन विकसित करना | मास्टर प्लान में शहर के बाहरी इलाकों में 'एजुकेशन जोन' नामित किए जाएं, जहाँ हॉस्टल और संबंधित बुनियादी ढाँचे का सुनियोजित विकास हो, जिससे पुराने शहर पर दबाव कम हो। |

**2. अर्थव्यवस्था का विविधीकरण**

सीकर की वर्तमान एकल–उद्योग (शिक्षा) पर निर्भरता को कम करना महत्वपूर्ण है।

- स्वास्थ्य और चिकित्सा हब :
  - शिक्षा की तर्ज पर मेडिकल कॉलेज, पैरामेडिकल प्रशिक्षण संस्थान और विशेषीकृत अस्पताल विकसित कर सकते हैं, जिससे यह एक नया उच्च–राजस्व और उच्च–रोजगार वाला क्षेत्र बन सकता है।
- लघु और मध्यम उद्योग :
  - शिक्षा सहायक उद्योगों (जैसे ई–कंटेंट, प्रिंटिंग, स्टेशनरी निर्माण) से संबंधित लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देना, साथ ही कृषि आधारित उद्योगों को भी बढ़ावा देना।
- पर्यटन को बढ़ावा :
  - शेखावाटी की हवेलियों और धार्मिक स्थलों (खाटू श्याम जी, जीण माता मंदिर सालासर बालाजी) के निकट होने का लाभ उठाते हुए पर्यटन उद्योग को मजबूत करना, जिससे अर्थव्यवस्था का एक नया मजबूत स्तंभ तैयार हो सके।

**3, मानव पूंजी और कौशल विकास**

- उच्च–मूल्य कौशल प्रशिक्षण :
  - स्थानीय युवाओं को शिक्षा क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले उच्च–कौशल वाले रोजगार (जैसे एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, डिजिटल मार्केटिंग, डेटा एनालिटिक्स) के लिए प्रशिक्षित करना।
- उद्यमिता को प्रोत्साहन :
  - छात्रों और स्थानीय निवासियों को छोटे स्टार्टअप (खासकर प्रौद्योगिकी और सेवाओं के क्षेत्र में) शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता और सलाह प्रदान करना।

**4, बुनियादी ढाँचे का आधुनिकीकरण**

- सार्वजनिक परिवहन में सुधार :
  - यातायात जाम कम करने के लिए छात्रों के लिए किफायती और कुशल सार्वजनिक बस सेवाएँ शुरू करना।
- स्मार्ट सिटी पहल :
  - अपशिष्ट प्रबंधन के लिए आधुनिक तकनीक (डोर–टू–डोर कलेक्शन, प्रोसेसिंग प्लांट) का उपयोग करना।

- पानी के संकट से निपटने के लिए वर्षा जल संचयन (वॉटर हार्वेस्टिंग) को अनिवार्य करना और सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) की क्षमता बढ़ाना।

## निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष : सीकर का 'शिक्षण नगरी' के रूप में विकास दोधारी तलवार की तरह है, जिसने आर्थिक समृद्धि तो लाई है, लेकिन पर्यावरणीय स्थिरता और बुनियादी ढाँचे पर गंभीर दबाव डाला है।

सुझाव :

1. नियोजित विकास : शहर के भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तत्काल नए मास्टर प्लान को लागू करना।
2. पर्यावरण संरक्षण : जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन को अनिवार्य करना और अधिक हरित क्षेत्रों का विकास करना।
3. बुनियादी ढाँचा : यातायात प्रबंधन के लिए वैकल्पिक मार्गों का विकास, सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करना और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली में सुधार करना।

## संदर्भ सूची

1. गुप्ता, एम.एल. (2021) 'अव्यवस्थित शहरीकरण कारण और निवारण', भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)।
2. राजस्थान पत्रिका (2023) अखबार में प्रकाशित लेख 'सीकर में 12 साल में बढ़ गई छह लाख आबादी, बदल गए मापदंड और स्वरूप' सीकर जिला पेज 15, 11 जुलाई, 2023
3. भारतीय जनगणना, (1991–2011)
4. नगर नियोजन विभाग, सीकर (राजस्थान)
5. Hiremath, R. B., Balachandra, P., Kumar, B., Bansode, S. S., & J. Murali. (2013). Indicator-based urban sustainability—A review. Energy for sustainable development, 17, 555–563.
6. Haase, D., Güneralp, B., Dahiya, B., Bai, X., & Elmqvist, T. (2018). Global Urbanization: Perspectives and Trends. *Urban Planet: Knowledge towards Sustainable Cities* (pp. 19–44), Cambridge: Cambridge University Press.
7. Khan, Y., Khan, Mohd. A., & Zafar, S. (2023). Dynamic linkages among energy consumption, urbanization and ecological footprint: Empirical evidence from NARDL approach. *Management of Environmental Quality: An International Journal*, *34*(6), 1534–1554.
8. https://citypopulation.de/en/india/rajasthan/0813__sikar/2025
9. List of cities and towns in Rajasthan from Wikipedia, November 2025